वार्तालाप-525, अनंतपुर (आंध्र प्रदेश), दिनांक 28.02.08

Disc.CD No. 525, dated 28.02.08 at Anantpur (Andhra Pradesh)

समयः 00.01-00.50

जिज्ञासुः बाबा कहते हैं, बगुलों के बीच में हंस नहीं रह सकते। फिर कहते हैं, बगुलों के बीच हंस अपनी मस्ती में रहते हैं। तो...

बाबाः 100 बगुलों के बीच में हंस अपनी मस्ति में रह सकता है। माना सभी की बात नहीं बताई। कोई-2 ऐसी पावरफुल आत्मायें हैं कि उनके ऊपर दूसरों के संग के रंग का प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन ऐसी थोड़ी आत्मायें होती हैं। सब नहीं होते हैं। पक्का हंस बन जावे तो फिर कोई की परवाह करेगा नहीं। एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

Time: 00.01-00.50

Student: Baba says that swans (*hans*) cannot live in the midst of herons (*bagula*). Then He says that swans remain intoxicated (i.e. happy) even in the midst of the herons.

Baba: A swan can remain intoxicated (i.e. happy) even in the midst of 100 herons. It means that it was not said for everyone. There are some powerful souls who are not influenced by the colour of others' company. But such souls are few. Everyone is not like that. If someone becomes a firm swan, he will not care for anyone. One Shivbaba and none else.

समयः 00.59-01.51

जिज्ञासुः राम ने वशिष्ठ के पास पढ़ाई किया। वशिष्ट कौन है?

बाबाः राम के लिए जो गायन है विशिष्ट, साधारण नहीं है। आम मनुष्यों की तरह नहीं है। माना आम मनुष्यात्माएं जो भी हैं वो सब जन्म मरण के चक्र में आने वाली हैं। कोई ऐसी मनुष्य आत्मा नहीं है जो जन्म मरण के चक्र में आने वाली न हो। लेकिन राम जिससे पढ़ाई पढ़ता है वो वशिष्ट है, स्पेशल है। कौन है वो? शिवबाबा। राम की आत्मा कोई साधारण से पढ़ाई नहीं पढ़ती है। उसको कहते हैं वशिष्ट।

Time: 00.59-01.51

Student: Ram studied from Vashishth. Who is Vashishth?

Baba: It is famous about Ram that… he [Vashishth] is special; he is not ordinary. He is not like ordinary people. It means that all the ordinary human souls pass through the cycle of birth and death. There is no human soul which does not pass through the cycle of birth and death. But the one from whom Ram studies is *vashisht*, he is special. Who is He? Shivbaba. The soul of Ram does not study from an ordinary one. He is called Vashisht.

समयः 01.58-03.08

जिज्ञासुः बाबा, दिल्ली का सुधार पूरा भारत का सुधार।

बाबाः दिल्ली का परिवर्तन सारी दुनियाँ का परिवर्तन।

जिज्ञासुः दिल्ली का परिवर्तन पूरी दुनियाँ का परिवर्तन कहते हैं ना?

बाबाः सारी दुनियाँ का परिवर्तन। हाँ, जी।

जिज्ञासुः ऐसे क्यों नहीं कहते हैं कि दिल्ली का सुधार पूरी दुनियाँ का सुधार?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः पूरी दुनियाँ का सुधार नहीं होता ना। पूरी दुनियाँ में तो दूसरे-2 धर्म की आत्मायें हैं। दूसरी धर्म की आत्मायें तो सब सुधरने वाली नहीं हैं। सुधरा हुआ माना देवता। अनसुधरा हुआ माना और-2 धर्म वाले। तो ऐसे नहीं कह सकते, "दिल्ली का सुधार माना सारी दुनियाँ का सुधार"। ये ठीक है "दिल्ली का परिवर्तन सारे भारत का परिवर्तन"।

Time: 01.58-03.08

Student: Baba, reform of Delhi means the reform of the entire India.

Baba: Improvement of Delhi means the improvement of the entire world.

Student: It is said that the improvement of Delhi means the improvement of the entire world.

Baba: Improvement of the entire world. Yes.

Student: Why isn't it said, the reform of Delhi means the reform of the entire world?

Baba: The entire world is not reformed, is it? The entire world includes souls of other religions. All the souls of other religions are not going to reform. Reformed means deity. Unreformed means the ones who belong to other religions. So, it cannot be said, "Reformation of Delhi means the reformation of the entire world". "The improvement of Delhi means the improvement of entire India, this is correct".

समयः 03.10-05.00

जिज्ञासुः बाबा, साक्षीदृष्टा बनना अच्छा है या सच्चा रिपोर्ट देना अच्छा है करके बाबा बोलते हैं ना? दोनों में से कौनसा अच्छा है?

बाबाः साक्षीदृष्टा का मतलब ये नहीं है कि बस हम देखते रहें और प्रतिक्रिया कुछ भी न करें, जो होता है सो होने दो। साक्षीदृष्टा का मतलब ये है कि हमने जो कुछ देखा जो कुछ भी सुना उससे हम प्रभावित न हो। जो भी देखा, जो भी सुना वो सब लिया और बाप को दे दिया। हमारी जिम्मेवारी खतम। बाप जाने बाप का काम जाने। अगर प्रभावित होते हैं तो उसको साक्षीदृष्टा नहीं कहेंगे।

जिज्ञासुः अगर रिपोर्ट ना देंगे तो भी पाप चढ़ता है क्या?

बाबाः बिलकुल चढ़ता है। फिर साक्षीदृष्टा कैसे रह पायेंगे? फिर तो जैसे जिम्मेवारी हमने अपने ऊपर ले ली। पाप को देखेंगे, पाप को सुनेंगे, तो सुनने और देखने वाले के ऊपर भी पाप चढ़ता है। इसीलिए जो कुछ भी देखा उसका सारा पोतामेल बाप को दे देना चाहिए और खुद साक्षीदृष्टा हो जाना । नहीं तो वही-2 बातें फिर बार-2 याद आती रहेंगी। पाप की याद आवेगी तो अंत मते सो गते हो जावेगी।

Time: 03.10-05.00

Student: Baba, is it better to be a detached observer (*saakshi drishta*) or is it better to give a true report; Baba says so, doesn't He? Which is better among both?

Baba: *Sakshi drishta* does not mean that we simply keep observing and do not react at all, we let whatever happens happen. *Sakshi drishta* means, we should not be affected by whatever we see or hear. We grasp whatever we see, whatever we hear and give it to the Father. Our responsibility is over. The Father knows and the Father's task knows. If we become influenced, we will not be said to be *sakshi drishta*.

Student: Do we accumulate sin if we do not report?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: You certainly accumulate [sin]. Then how will you be able to remain *sakshi drishta*? Then it is as if we have taken the responsibility upon ourselves. If you see sins (being committed), if you hear about sins, then the one who hears and sees a sin will also accumulate sins. This is why you should give the complete *potamail* to the Father about whatever you see and then you should become *sakshi drishta*. Otherwise, you will continue to remember the same topics. If you remember the sin, then your final thoughts will lead you to your destination.

समयः 05.02-09.22

जिज्ञासुः बाबाजी, आंध्र में, अनंतपुर जिले में, मणीश्वर नामक एक शहर है, एक जिला। उस जिले के पास हेमावती नामक एक गांव है। वहां एक मन्दिर है। उस मन्दिर में ११० शिवलिंग हैं। पहले, वहां पर एक मूर्ति को बनाकर मानव आकार में पूजा करते थे। उस मन्दिर को यादगार क्या है? ११० लिंग है वहाँ।

Time: 05.02-09.22

Student: Babaji, there is a city, a district named Manishwar in the Anantpur district of Andhra (state). There is a village named Hemavati in that district. There is a temple there. In that temple there are 110 *Shivlings*. Earlier they used to prepare an idol in a human form and worship it. What is the memorial of that temple? There are 110 *lings* over there.

बाबाः भक्तिमार्ग में तो अगडम-बगडम करते रहते हैं, मिक्स करते रहते हैं। ओरिजनल किसीने बनाया होगा 108 लिंग। बाद में किसी ने दो और जोड़ दिए तो 110 हो गए। 110 की कोई तुक ही नहीं बनती है। 108 लिंग जो है उनकी तो तुक बनती है कि हाँ उन्होंने अपने को शालिग्राम बनाया, निराकारी स्टेज में स्थिर किया। बाकी दो कहाँ से आ गए? इसका मतलब दो और बाद में एड किए गए है।

Baba: In the path of *bhakti*, they keep doing nonsensical things; they keep mixing. Originally someone must have prepared 108 *lings*. Later on, someone must have added two more; so it became 110. There is no logic [in making] 110. There is a logic to the 108 *lings,* that yes, they made themselves *shaligrams*; they made themselves constant in an incorporeal stage. Where did the remaining two come from? It means that two more have been added later on.

भक्तिमार्ग में और ज्ञानमार्ग में यही तो खास फर्क है। ज्ञानमार्ग में हर बात का जवाब होता है। जिसके ऊपर श्रद्धा और विश्वास कायम रख सकते हैं। भक्तिमार्ग में कोई ठिकाना ही नहीं, आगा-पीछा ही नहीं। जो गुरूओं ने कह दिया, जो शास्त्रों में लिखा है बस उसे सत् वचन महाराज कहके मान गए। ज्ञानमार्ग में तो एक-2 बात की समझ मिलती है और समझ इसीलिए मिलती है कि बताने वाला एक ही बाप है। मिक्सचरिटी होने की बात ही नहीं।

This indeed is the special difference between the path of *bhakti* and the path of knowledge. In the path of knowledge everything has an answer, on which we can develop faith. In the path of *bhakti*, there is no destination, there is no rationale; people believe whatever the gurus speak, whatever is written in the scriptures to be true. In the path of knowledge you receive the understanding to every topic. And you receive the understanding because the narrator is only the one Father. There is no question of mixing.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाप सिर्फ आते हैं एक जन्म के लिए। उसमें भी जब बाप आते हैं तो गुप्त पार्ट बजाते हैं। लुका-छुपी का खेल होता रहता है। तो भक्तिमार्ग की शूटिंग भी होती रहती है। लेकिन सदैव तो गुप्त नहीं रह सकता। अगर सदैव गुप्त रहे तो सारी दुनियाँ में, हर धर्म वालों में गॉड फादर की इतनी मान्यता कैसे से हो? भगवान बाप की हर धर्म में इतनी मान्यता हुई है तो ज़रूर वो संसार में कभी प्रत्यक्ष भी हुआ है। सच्चाई अंत में ही खुलती है। इसीलिए हिंदुओं में खास ये परम्परा चली आ रही है कि अंत समय जब होता है, मनुष्य प्राण छोड़ता है तो अंत में कहते हैं राम नाम सत्य है। जन्म लेते हैं, जीवन में परवरिश लेते हैं, शादी, ब्याह करते हैं, उत्साव मनाते हैं तब नहीं कहते हैं राम नाम सत्य है। इससे क्या साबित हुआ? कि राम भगवान अंत में ही संसार में प्रत्यक्ष होता है।

The Father comes only for one birth. Even in that [birth], when the Father comes, He plays a hidden part. A hide and seek game is played. So, the shooting of the path of *bhakti* also takes place. But He cannot remain hidden forever. If He remains hidden forever, then how will God the Father be believed by the entire world, by the people of every religion? God the Father is believed by every religion. So, He certainly must have been revealed in the world at some time. The truth is revealed only in the end. This is why this tradition is especially being followed among the Hindus that when it is the end time [of a person], when a person leaves his body, it said in the end, *"Ram naam satya hai"* (the name of Ram is true). They do not say that the name of Ram is true when they are born, when they take sustenance in life, when they get married, when they celebrate. What does it prove? [It proves] that God Ram is revealed in the world only in the end.

समयः 02.00-02.57

जिज्ञासुः बाबा, सर्च लाईट माना क्या?

बाबाः इधर सर्कस आया कि नहीं कभी? आया ना? तो सर्कस में रात में एक लाईट फेंकते हैं चारों तरफ। वो सर्च लाइट कही जाती है। तो ऐसे ही अपनी आत्मा को, स्टार को परमपिता परमात्मा ज्योतिबिंदु के साथ मिल करके, चारों ओर संसार में सर्चलाईट देना या कोई खास आत्मा को स्पेशल सर्चलाइट देना। जैसे कोई तीखी टार्च से कोई रोशनी डालता है ऐसे। उसको कहते हैं सर्च लाइट।

Time: 02.00-02.57

Student: Baba, what is meant by searchlight?

Baba: Was any circus organized here or not? It was, wasn't it? So, in a circus, a light is thrown everywhere at night. That is called *searchlight*. So, similarly, the soul, the star along with the Supreme Father, Supreme Soul, the point of light should give searchlight everywhere in the world or give a special searchlight to a special soul. For example, if someone throws light with a powerful torch like this (Baba is gesturing), it is called searchlight.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 03.00-09.49

जिज्ञासुः बाबा, विष्णु को शंख, चक्र, गदा, कमल पुष्प क्यों दिखाते हैं?

बाबाः वास्तव में विष्णु को नहीं दिखाना चाहिए। ये आयुध शंख, चक्र, गदा, पद्म हैं ब्राह्मणों के। क्योंकि ज्ञान का चक्र कौन घुमाते हैं? देवतायें घुमाते हैं या इस समय ब्राह्मण ज्ञान का चक्र घुमाते हैं? ब्राह्मण हैं जिनको ज्ञान का चक्र है। 84 के चक्र में हम आत्मा ने कैसे जन्म लिए, कैसे चढ़ती कला होती है, कैसे उतरती कला होती है, इस बात पर विचार सागर मंथन करना। जो-2 जितना स्वदर्शन चक्र घुमाते हैं अपनी आत्मा को 84 जन्मों में देखते हैं उनकी उतनी ही मनन-चिंतन-मंथन की प्रैक्टिस होती जाती है पक्की। अच्छी और पक्की प्रैक्टिस होती है तो अपने अनेक जन्मों की जानकारी हो जाती है। और जो हिम्मत करते हैं उनको मदद बाप से मिलती है। तो बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों को अनेक जन्मों की जानकारी देता हूँ। तुम अपने जन्मों की जानकारी को नहीं जानते हो। तो क्या जो आत्मायें मनन-चिंतन-मंथन नहीं करती हैं उनको जानकारी हो जाती है क्या? जो भी मनन-चिंतन-मंथन करते जाते हैं उनको अपने स्वरूप की जानकारी होती जाती है। तो ये चक्र हमारा है ब्राह्मणों का।

Time: 03.00-09.49

Student: Baba, why is Vishnu shown to hold a conch (*shankh*), discus (*chakra*), mace (*gadaa*) and lotus flower (*kamal pushp*)?

Baba: Actually, Vishnu should not be depicted [with these instruments]. These instruments, i.e. *shankh, chakra, gadaa* and lotus flower belong to the Brahmins because who rotate the discus of knowledge? Do the deities rotate it or do the Brahmins rotate the discus of knowledge at the present time? It is the Brahmins who have this discus of knowledge. How were we souls born in the cycle of 84 (births), how the celestial degrees increase, how the celestial degrees decrease, to think and churn on this topic. The more someone rotates the *swadarshan chakra* (the discus of self realization) and sees 84 births of his soul, their practice of thinking and churning becomes strong to that extent. If the practice is good and strong, then they know about their many births. And those who show courage get help from the Father. So, the Father says, I give you children the information of many births. You do not know about your births. So, do the souls, who do not think and churn know? All those who think and churn come to know about their form; so this *chakra* belongs to us Brahmins.

ऐसे ही शंख। शास्त्रों में दिखाते हैं कि जब युद्ध शुरू होता था तो पहले क्या करते थे? शंखनाद करते थे। चारों तरफ आवाज फैल जाती थी। तो ये ज्ञान का शंखनाद है। ब्राह्मणों की दुनियाँ में अभी एडवान्स ज्ञान का शंखनाद चारों ओर गूँज गया की नहीं गूँज गया? गूँज गया। थोड़ा बहुत रहा होगा वो भी गूँज जावेगा। ज्ञान पूरा हुआ, पढ़ाई पूरी हुई फिर क्या होता है? लड़ाई शुरू होती है।

Similarly *shankh* (conch). It is shown in the scriptures that when a war began, what did they used to do first? They used to blow a conch. The sound used to spread everywhere. So, this is a sound of the conch of knowledge; has the sound of the conch of advance knowledge spread everywhere in the world of Brahmins or not? It has. If it is yet to spread somewhere, it will spread there as well. When the knowledge is over, when the study is over, what happens next? The war begins.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

गदा- ज्ञान की बातें जब ज्यादा बुद्धि में नहीं आती है.... तलवार तो होती है धारदार और गदा? गदा धारदार नहीं होता है लेकिन एक ही गदा पीठ पर पड़ जाए तो कमर टूट जाती है। माने बाप की याद में रह करके हम कोई को भी आत्मा को बदलाना चाहे, शक्ति देना चाहें अथवा मोड़ना चाहें तो मोड़ सकते हैं। विकारों को तोड़ सकते हैं। ये मोटी चीज़ है। बुद्धि में ज्यादा भीम तीखा था या बुद्धि में अर्जुन ज्यादा तीखा था? अर्जुन तीखा था तो उनको बाण दिखाए जाते हैं। और भीम? भीम को गदा दिखाते हैं। ऐसे ही जो विष्णु का चित्र है उसमें ब्रह्मा की तरफ कौनसा आयुध दिखाया हैं? गदा। एक तरफ ब्रह्मा बैठा है, वहाँ दिखाया है गदा। क्यों? ब्रह्मा की तरफ गदा क्यों दिखाया? क्योंकि बुद्धि बच्चा बुद्धि थी। ज्ञान में तीक्ष्णता से बुद्धि चलती नहीं थी। देवियों को तलवार और कटार दिखाते हैं। मम्मा की बुद्धि तीखी थी। तो गदा है याद की स्टेज। याद में रह करके, निश्चय बुद्धि बन करके ड्रामा के पट्टे पर मजबूत हो करके डटे रहना माना गदा।

Gadaa (mace) – When the topics of knowledge do not come to the intellect much... A sword is sharp and a mace? A mace is not sharp. But if someone is hit on his back only once with a mace, the back breaks. It means that if we wish to change a soul while being in the Father's remembrance, if we wish to give power to him or if we want to mould him, we can mould him. We can break the vices. This is something blunt. Was Bhim more intelligent (sharper) or was Arjun more intelligent (sharper)? Arjun was sharp; so, he is shown with arrows. And what about Bhim? Bhim is shown with a mace. Similarly, in the picture of Vishnu, which instrument is shown towards Brahma? A mace. A mace has been shown towards the direction where Brahma is sitting. Why? Why was a mace shown towards Brahma? It is because his intellect was child-like. The intellect was not sharp enough in knowledge. *Devis* are shown with sword (*talwaar*) and dagger (*kataar*). Mamma had a sharp intellect. So, mace is a stage of remembrance. To, remain firm on the path of drama while being in remembrance and after developing faith, means mace.

और पद्म? पदम माना कमल का फूल। भल हम रहते हैं कीचड़ की दुनियाँ में; इस शरीर से कहाँ रहते हैं? कीचड़ की दुनियाँ में रहते हैं। कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञान इन्द्रियाँ भल कीचड़ की दुनियाँ में पड़ी हुई हैं, विषय सागर में गोते खा रहे हैं, विषय वैतरणी नदी में गोते खा रहे हैं लेकिन मन-बुद्धि कहाँ लगी हुई है? एक बाप के पास। जैसे कमल का फूल होता है। कीचड़ में पड़ा रहे और निकालो तो एक भी बुंद कीचड़ का नहीं रहता। ऐसे बुद्धि इस तरह निर्लिप्त रहे इस दुनियाँ में रहते हुए भी। तो विष्णु जो संपूर्ण देवता है उसके ये आयुध थोड़े ही हैं। किसके हैं? हम ब्राह्मणों के ये आयुध हैं। बाकी ब्राह्मणों के आयुध सदैव स्थाई नहीं रहते हैं। अभी-2 स्वदर्शन चक्र चलता है। फिर दुनियाँदारी की बातों में जाने से भूल जाता है। अभी-2 हमारी बुद्धि में बैठा हुआ है कि निर्लिप्त जीवन बिताना है, कमल फूल समान जीवन बिताना है, कीचड़ की दुनियाँ में रहते हुए बुद्धि उपराम बनाके रखना है लेकिन फिर क्या होता है? फिर विकारी दुनियाँ में जाते-2 बुद्धि विकारी बन जाती है। माना जो ब्राह्मण हैं वो सम्पन्न स्टेज में नहीं रह पाते। निश्चय बुद्धि विजयते सदैव इस स्टेज में नहीं रह पाते। इसीलिए फिर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ब्राह्मणों को वो आयुध नहीं दिखाए हैं। किसको दिखाए हैं? जो संपूर्ण ब्राह्मण सो देवता, उनको ये आयुध दिखा दिये हैं।

And lotus (*padma*)? *Padam* means lotus flower. Although we live in the world of sludge; where do we live through this body? We live in a world of sludge. Although the organs of actions and sense organs are in the world of slush, although they are drowning in the ocean of vices (*vishaysaagar*), although they are drowning in the river of vices, where is our mind and intellect? With one Father. Just like a lotus flower. It lies in murky waters and if you remove it, not even a drop of the murky water sticks to it. Similarly, the intellect should remain detached while living in this world. So, these instruments do not belong to the complete deity, i.e. Vishnu. Whom do they belong to? These instruments belong to us Brahmins.

As for the rest, the instruments of Brahmins do not remain permanent. Just now they rotate the *swadarshan chakra* (discus of self realization) and when they become busy in the worldly affairs, they forget. Just now it sits in our intellect that we have to lead a detached life, we have to keep our intellect detached while being in this world of mud, then what happens? Then while roaming in the vicious world the intellect becomes vicious. It means that the Brahmins are unable to live in a complete stage. They are unable to become constant in the stage of *nishchay buddhi vijayate* (the one who has a faithful intellect becomes victorious). This is why Brahmins have not been shown to have these instruments. Who has been shown to have these instruments? The perfect Brahmins who become deities have been shown to have these instruments.

समयः 09.50-10.40

जिज्ञासुः बाबा, बुद्धि का काम सिर्फ अंतिम जन्म में ही है।

बाबाः अंतिम जन्म में क्यों? इससे पहले जो 63 जन्म हुए उनमें बुद्धि का काम नहीं रहा? बिना बुद्धि के ही राजाओं ने ही क्या राजाईयाँ जीत ली?

जिज्ञासुः सतयुग- त्रेता में तो बुद्धु ही थे ना?

बाबाः सतयुग-त्रेता की बात अलग। सतयुग-त्रेता में तो हमें प्रारब्ध मिलती है। वहाँ कोई हम पुरूषार्थ नहीं करते जो बुद्धि चलानी पड़े। सतयुग-त्रेता में जो भी हमको मिला वो कहाँ की प्रारब्ध मिली? संगमयुग में बाप ने जो हमें दे दिया 21 जन्मों के लिए वो मिल गया। और 63 जन्मों में? जैसी-2 बुद्धि चलायेंगे, जैसा-2 पुरूषार्थ करेंगे वैस-2 अगले जन्म में प्राप्ति करेंगे। बिना बुद्धि के प्राप्ति नहीं हो सकती।

Time: 09.50-10.40

Student: Baba, the intellect works only in the last birth.

Baba: Why only in the last birth? Did the intellect not work in the 63 births that you have had before this? Did the kings achieve kingship without intellect?

Student: We were fools in the Golden Age and Silver Age, weren't we?

Baba: The topic of the Golden Age and the Silver Age is different. In the Golden Age and Silver Age we get the fruits. There we do not make any *purusharth* (special effort) for which we need to use our intellect. Where did we earn those fruits that we receive in the Golden Age and Silver Age? We got whatever the Father gave us in the Confluence Age for 21 births. And in the 63 births? As we use our intellect, as we make *purusharth*, so we shall get attainments in the next birth. There cannot be attainments without [using] intellect.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 10.45-20.11

जिज्ञासुः बाबा, रावण का मरण नाभि में क्यों?

बाबाः रावण को दस शीश थे। राम ने बाण चलाने शुरू किए और सर कटने लगे। ये रावण के सर क्या चीज है? अनेक प्रकार की बुद्धि चलाना, तुंडे-2 मतिर्भिन्ना। बाप जो बातें समझाते हैं वो बातें बुद्धि में नहीं बैठती और ही नए-2 प्रश्न उत्पन्न होते रहते हैं। एक प्रश्न का जवाब दिया सर कट गया तो दूसरा सर निकल आता है। दूसरा प्रश्न शुरू हो गया। दूसरे प्रश्न का जवाब दिया तीसरा आ गया, चौथा आ गया। बार-2 सर काटते जाते थे। ये प्रश्न कहाँ पैदा होते हैं? सर के अंदर ही प्रश्न पैदा होते हैं। तो अनेक मतों वाली जो बुद्धि रही है 63 जन्मों में, अनेकों के संग के रंग वाली रही है तो औरों-2 के प्रश्न बुद्धि में ज्यादा घर कर जाते हैं और बाप की बात बुद्धि में जल्दी समझ में नहीं आती है।

Time: 10.45-20.11

Student: Baba, why is Ravan's death hidden in his navel?

Baba: Ravan had ten heads. Ram started shooting arrows and the heads began to be cut. What are these heads of Ravan? [It is] using the intellect in different ways, every head has its own opinion (*tundey-tundey matirbhinna*). The topics that the Father explains do not sit in the intellect, newer questions keep emerging. When one question is answered, that head is cut; a second head emerges. The second question arises. When the second question is answered, a third one emerges; a fourth one emerges. The heads were cut again and again. Where do these questions arise? The questions arise in the head itself. So, the intellect which had different opinions in the 63 births, which had the color of the company of many, so the questions asked by others sit in the intellect more easily and the Father's teaching does not sit in the intellect easily.

तो ये सर कटते गए, वो बाण मारते गए। बाण मारते-2 रामजी भी थक गए और रावण के सर कटते गए वो खुश होता गया। आहा! हमारा सर कट रहा रहा है। ...हम तो फिर भी प्रश्न-उत्तर कर रहे हैं। तो फिर जो विभीषण है, रावण के ही कुल का, उनके ही घर परिवार का; "घर का भेदी लंका ढावे"। उसने पोलपट्टी सारी खोल दी। उसने बताए दिया ये रावण की जो नाभि है ना, इस नाभिकुंड में अमृत भरा हुआ है। वो अमृत जब तक है तब तक ये सर कटेंगे नहीं, नए-2 सर निकलते ही चले आयेंगे।

So, the heads continued to be cut, [and] he continued to shoot arrows. Even Ram was tired of shooting the arrows and Ravan's heads continued to be cut, He continued to feel happy. Wow, my heads are being cut…. I am still asking questions. So then Vibheeshan, who belonged to the clan of Ravan, to his own family; *"ghar ka bhedi lanka dhaavey"* (the informer from the home led to the defeat of Lanka). He opened all the secrets. He told that there is nectar in the navel of Ravan. As long as there is nectar there, these heads will not be cut (permanently), new heads will keep emerging.

ये नाभि कुंड क्या है? ये नाभि कुंड कोई दूसरी चीज नहीं है। इसकी नाभि में 16000 नसों नाड़ियों वाला वो स्थान है, जहाँ 16000 नसें नाड़ियाँ जाकर के इकट्ठी होती हैं। माना कोई ऐसा केंद्रबिंदु है जहाँ से 16000 नसों नाड़ियों का संबंध जुटा हुआ है। 8000 नसें नाड़ियाँ हैं

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

गंदा खून बहाने वाली और 8000 नसें नाड़ियाँ हैं शुद्ध खून बहाने वाली। मनुष्य के शरीर में 16000 नसे नाड़ियाँ होती हैं छोटी से लेकर बड़ी तक। कुछ धमनियाँ ऐसी होती हैं, नाड़ियाँ ऐसी होती हैं जो हृदय से शुद्ध खून हो करके सारे शरीर में पहुँचाती है और कुछ नाड़ियाँ ऐसी होती हैं जो गंदा खून हो जाता है उस गंदे खून को ला करके हृदय में फिर से शुद्ध करने के लिए भेजती है। तो रूद्रमाला और उसकी जो भी नाड़ियाँ हैं 8000 वो कैसा खून बहाने वाली हैं? कितना भी ज्ञान सुनाओ लेकिन पवित्र खून बहता है संकल्पों का कि फिर-2 अपवित्र हो जाता है? कीचड़ में रहते कमल फूल समान सम्पन्न बनते हैं या नहीं बन पाते हैं? बन पाते हैं? नहीं बन पाते। फिर भी वही गंदे संकल्प चल पड़ते हैं। तो 16000 आत्मायें ऐसी हैं, आत्मारूपी नसे नाड़ियाँ उस विराट पुरूष की जिनका केंद्र बिंदु कौन है?

जिज्ञासु: नाभि।

What is this navel (*naabhi kund*)? This navel is not something else. The navel is the meeting place, of 16000 blood vessels, where 16000 blood vessels meet. It means that there is such a center point which is connected to the 16000 blood vessels. In 8000 veins impure blood flows and in 8000 arteries pure blood flows. There are 16000 big and small blood vessels in the human body. There are some arteries which supply pure blood from the heart to the entire body. And there are some veins which collect impure blood and send it to the heart again for purification. So, what kind of blood flows in the Rudramala and all its 8000 blood vessels? To whatever extent you may narrate knowledge, does pure blood flow [in them] or does it become impure again and again? Are they able to become pure like a lotus while living in slush or not? Are they able to become [pure]? They are unable to become [pure]. Still the same dirty thoughts keep emerging. So, 16000 souls, the soul-like blood vessels of that *viraat purush* are like this. Who is their center point?

Student: The navel.

बाबा: नाभि माना? ना-अभी। क्या? अभी नहीं थोड़ा और ठहर जाओ तैयार होने लेने दो। अव्यक्त बापदादा क्या कहते हैं? "एडवान्स पार्टी रेडी है, तैयार है। आप भी तैयार हो?" तो बच्चे क्या कहते हैं? "थोड़ा टाईम और, अभी नहीं"। ना-अभी। माना कोई आत्मा है जो बकरी का पार्ट बजाने वाली है। त्रिमूर्ति में एक शेर है, एक बकरी है, एक घोड़ा है। तो बकरी डरने वाली होगी या शेरनी होगी? डरने वाली होती है। पता नहीं जाने क्या हो जाए। अरे! सच्चाई से सच्चखण्ड की ही स्थापना होगी, कोई झूठ खण्ड थोड़े ही बन जाएगा? जब बुद्धि में बैठा है कि सच्चाई है तो सच्चा ही होगा। तो वहाँ अगर बाण मार दिया ज्ञान का...। कहाँ? नाभि में। जो अव्यक्त बापदादा ने डायरेक्शन भी दे दिया है। किसका आवाहन करो? विजयमाला का आवाहन करो। अब विजयमाला में तो शहद की मक्खियाँ हैं। वो शहद की मक्खियाँ सारी ही आवाहन हो जायेंगी एक साथ? कैसे होती हैं? रानी मक्खी पकड़ते हैं तो आवाहन हो जाता है। परंतु अगर वो रानी मक्खी कोई बड़े महल के अंदर बैठी हो और महल को चारों तरफ से मस्किटो नेट से घेर रखा हो, मच्छरों सदृश्य आत्माओं ने तो जो दूसरी मक्खियाँ है वो रानी मक्खी के पास पहुँच पायेंगी? नहीं पहुँच पायेंगी।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: What is meant by *naabhi* (navel)? *Na-abhi*. What? Not now, wait a little more; let me get ready. What does *Avyakta Bapdada* say? "The advance party is ready. Are you also ready?" So, what do the children say? "Some more time. Not now". *Na-abhi*. It means that there is some soul who plays the part of a goat. In the Trimurty, one is a lion, one is a goat, and one is a horse. So, will a goat fear or will she be a lioness? She fears, 'Who knows what may happen?' Arey! Through truth only the land of truth will be established. A land of falsehood will not be established. When it is seated in the intellect that it is the truth, then it will definitely be true. So, if the arrow of knowledge is shot there... Where? In the navel, for which *Avyakta Bapdada* has also given a direction. Whom should we invoke? Invoke the *Vijaymala*. Well, there are honeybees in the *Vijaymala*. Will all those honeybees be invoked at the same time. How are they [invoked]? When the queen bee is caught, all the bees are be summoned. But if that queen bee is sitting in a big palace, and if the palace has been surrounded by a mosquito net from all four sides, by the mosquito like souls, then will the other bees be able to reach the queen bee? They will not be able to reach her.

तो बताया कि वहाँ तक बाण पहुँचाओ ज्ञान का, नाभि कुंड तक। तो रावण के ये जो ढेर सारे सिर पैदा हो रहे हैं, "क्यों, क्या, कैसे? इस मुरली में ऐसे कहा, उस मुरली में वैसे कहा, तो ये बात कैसे, तो वो बात कैसे?" बाबा तो हर बात का जवाब देते जाते हैं। क्यों? क्योंकि बाबा की बुद्धि में तो सब कुछ स्पष्ट है, हर बात का जवाब है। वो शास्त्रवादी गुरू, पंडित, आचार्य होते हैं। वो शास्त्रों से पढ़-2 करके फिर प्रश्नों का जवाब देते हैं और वो भी भरी सभा में किसी को इजाजत नहीं देते हैं प्रश्न उत्तर करने की। क्यों? क्योंकि शास्त्रों का ज्ञान ही अधूरा है। शास्त्र सम्पूर्ण ज्ञान नहीं सुनाए सकते। क्यों नहीं सुनाए सकते? क्योंकि शास्त्रों में बंधा हुआ ज्ञान होता है और ईश्वरीय ज्ञान कोई शास्त्रों के पन्नों में बंधा हुआ नहीं है। ये तो अथाह सागर है। 500-700 करोड़ मनुष्य आत्मायें सैकड़ो प्रश्न करें तो कितने प्रश्न हो जावेंगे? अरबों-खरबों प्रश्न हो जावेंगे और उन सब का उत्तर परमपिता परमात्मा के पास है। तो ये सर तो भले तैयार होते रहें, निकलते रहें और उनको काटते रहें। इनका कोई अंत नहीं है। अंत कब होगा? जो नाभि कुंड में जो पवित्रता की खान बैठी हुई है, वहाँ जब बाण लगे, तो ये प्रश्नोत्तर, रावण के सर पैदा होना बंद हो जायेंगे।

So, it was said, send an arrow of knowledge up to there, the navel. So, these numerous heads of Ravan which are emerging, "why, what, how? It has been said like this in this Murli, it has been said like this in that Murli; so, how is this, how is is that?" Baba goes on giving answers to everything. Why? It is because everything is clear in Baba's intellect. There is an answer for every question. Those scholars, gurus, pundits, acharyas, they read the scriptures and answer the questions. Moreover, they do not permit anyone to raise questions in a packed gathering. Why? It is because the very knowledge of the scriptures is incomplete. The scriptures cannot give the complete knowledge. Why can't they give? It is because the scriptures contain limited knowledge and Godly knowledge is not bound in the pages of scriptures. This is an immeasurable ocean. If the 5-7 billion human souls raise hundreds of questions, what will be the total number of questions? There will be millions and billions of questions. And the Supreme Father Supreme Soul has the answers for all those questions. So, these heads may continue to become ready, they may continue to emerge and we may continue to cut them. There is no end for them. When will they end? When the arrow hits the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

storehouse of purity which is sitting in the navel, then these questions, i.e. the heads of Ravan will stop emerging.

समयः 31.45-34.40

जिज्ञासुः शास्त्रों में लव कुश का जन्म सीता से दिखाया गया है।

बाबाः लव और कुश नाम दे दिए हैं। नाम किस आधार पर दिए गये हैं शास्त्रों में? काम के आधार पर। तो लव माना प्यार। प्यार, शरीर के आधार पर प्यार होता है कि बिना शरीर के आत्मा फुदक-2 करके एक-दूसरे को प्यार करती रहती है? शरीर के आधार पर ही प्यार होता है। तो वो प्यार की एक्टिविटी करने में... जो चंद्रवंशी त्रेतायुगी राम कहा गया है, उस राम के जो बच्चे हैं वो दो प्रकार के दिखाए गए हैं। एक इस्लामी और दूसरे क्रिश्चियन। ब्राह्मणों से उत्पत्ति हुई सूर्यवंशीयों की और सूर्यवंशीयों से कौन निकले त्रेता में? चंद्रवंशी। और चंद्रवंशियों में से कौन निकले? इस्लामी और क्रिश्चियन। तो ये जो दो हैं विधर्मी, ये विशेष आत्मायें हैं जिनके मुखिया का नाम, बीजरूप आत्माओं का नाम लव और कुश रख दिया गया ।

Time: 31.45-34.40

Student: In the scriptures, Luv and Kush have been shown to have been born from Sita.

Baba: The names Luv and Kush have been given. On what basis are the names given in the scriptures? On the basis of the tasks performed (by someone). So, 'Luv' means affection. Is love on the basis of the body or do souls jump [around] and love each other without the body? Love is based on the body only. So, in performing the activity of love.... the one who is called the *Chandravanshi* (belonging to the Moon dynasty) Silver Age Ram; that Ram was shown to have two kinds of children. One belonging to Islam and the other is Christian. The *Suryavanshis* (those who belong to the Sun dynasty) emerged from the Brahmins, and who emerged from the *Suryavanshis* in the Silver Age? The *Chandravanshis*. And who emerged from the *Chandravanshis*? The people of Islam and Christians. So, these two *vidharmis* (those who belong to religions opposite to the Father's religion) are special souls, whose chiefs' name, the names of the seed-form souls have been given Luv and Kush.

लव है भरत का नाम। क्या? किससे प्यार करता था? राम को प्यार करता था या नहीं करता था? प्यार बहुत करता था। उसे राज्य की भी चिंता नहीं, कन्ट्रोलिंग पावर उसकी मुट्ठी में बनी रहे इस बात की भी चिंता नहीं। और कन्ट्रोलिंग पावर अपने हाथ में कौन लेना चाहता था? शत्रुघ्न। वो हुआ कुश। कुश माना काँटा, क्रिश्चियन धर्म। और इनकी पैदाइश भी कहाँ होती है? महल, माड़ियों, अटारियों में इनकी पैदाइश नहीं होती, राम के राज्य में इनकी पैदाइश नहीं होती। कहाँ पैदाइश होती है? काँटों के जंगल में । तो ये द्वापर, कलियुग क्या है? कांटों का जंगल है।

'Luv' is the name of Bharat. What? Whom did he used to love? Did he used to love Ram or not? He used to love him a lot. He did not worry about the kingdom; neither did he worry whether the controlling power remains in his hands or not. And who wanted to take the controlling power in his hands? Shatrughna. He happens to be Kush. *'Kush'* means thorn, the Christian religion. And where are they born? They are not born in palaces and big buildings; they are not born in the kingdom of Ram; where are they born? [They are born] in the jungle of thorns. So, what is the Copper Age and the Iron Age? It is a jungle of thorns.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 37.01-42.00

जिज्ञासुः ओम राधे मम्मा जब ज्ञान में आई थी तब प्रजापिता वाली सोल ज्ञान से चली गई थी क्या?

बाबाः चली नहीं गई थी। बाबा ने तो कहा है "ये मम्मा बाबा भी उनसे पढ़ाई पढ़ते थे"। लम्बे समय तक रही भी फिर बाद में चली गई राम वाली आत्मा।

जिज्ञासुः माना ओम राधे मम्मा तब ही आ गई ज्ञान में जब प्रजापिता वाली आत्मा थी।

बाबाः प्रजापिता थे तब ही आ गई और उनसे पढ़ाई भी पढ़ी लम्बे समय तक।

जिज्ञासुः बुद्धि की तीखी मानी जाती है फिर क्यों बाप को पहचाना नहीं आदि में?

बाबाः जब ब्रह्मा ने ही नहीं पहचाना; जो ब्रह्मा ओम राधे मम्मा का सरपरस्त है वो ही नहीं पहचानेगा तो मम्मा कैसे पहचान लेगी? बल्कि मम्मा के सामने ये बात भी प्रत्यक्ष नहीं की मुरली में कि प्रजापिता कौन है? तुम अपने नाम के आगे प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारी लिखो। मम्मा जब तक जीवित रही तब तक नहीं ये बात क्लियर की। मम्मा ने जैसे ही शरीर छोड़ा उसके बाद ये बात क्लियर कर दी। फिर भी ब्रह्मा की बुद्धि में नहीं आया।

Time: 37.01-42.00

Student: Had the soul of Prajapita left the knowledge when Om Radhey Mamma entered the path of knowledge?

Baba: He had not left [the path of knowledge]. Baba has said, "Even this Mamma and Baba used to study from them". He remained (in the yagya) for a long period; then later on the soul of Ram left (the *yagya*).

Student: It means that Om Radhey Mamma entered the path of knowledge when the soul of Prajapita was present.

Baba: She came [in knowledge] when Prajapita was there and she studied from him for a long time too.

Student: She is considered to have a sharp intellect; then why did she not recognize the Father in the beginning?

Baba: When Brahma himself did not recognize; when Brahma, who is the head of Om Radhey Mamma doesn't recognize, then how will Mamma recognize? Moreover, it was not revealed in the Murli in front of Mamma either 'who is Prajapita'. Write the name *Prajapita Brahmakumar-kumari* in front of your name. As long as Mamma was alive, this subject was not clarified. As soon as Mamma left her body, this subject was clarified. Even then it did not occur in the intellect of Brahma.

जिज्ञासुः साक्षात्कारों का अर्थ समझने के लिए तो ब्रह्मा बाबा प्रजापिता के पास चले गए ना?

बाबाः ठीक है।

जिज्ञासुः तो उनको ऊँच माना तब ही तो गए ना?

बाबाः हाँ गए। कभी-2 ऐसा होता है कि होशियार समझते हैं लेकिन ब्रह्मा बाबा की बुद्धि में ये भी तो बैठा हुआ था कि ये हमारी दुकान का नौकर है। दस साल से नौकरी कर रहा था। लेकिन नौकर होशियार भी तो हो सकता है मालिक से। तो मालिक से अगर नौकर होशियार

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

होता है तो मालिक क्या उसके पाँव पूजता है? नीची दृष्टि से देखता है या ऊँची दृष्टि से देखता है? नीची दृष्टि से ही देखेगा। तो धन का अहंकार तो रहता है ना? तो ब्रह्मा बाबा को भी धन का अहंकार चढ़ा रहा। ये मेरा नौकर है मैं इसका मालिक हूँ।

Student: Brahma Baba went to Prajapita to understand the meanings of the divine visions, didn't he?
Baba: It is correct.
Student: So, he went there only because he considered him [Prajapita] to be great, didn't he?
Baba: Yes, he went [to him]. It happens that he considers him to be intelligent sometimes. But it was also in the intellect of Brahma Baba: he is a servant in my shop. He had been working [here] for ten years. But the servant can also be cleverer than the master. So, if the servant is cleverer than the master, does the master touch his feet? Does he consider him to be inferior or superior? He will see him as an inferior only. So, there is the ego of wealth, isn't there? So, Brahma Baba also had the ego of wealth. [He thought:] "He is my servant. I am his master".

जैसे कोई जमींदार होते थे। उनके पास ढेर सारी जमीन होती थी। लोगों को आधे साझे पर दे देते थे। तो जो लोग मेहनत करते है उस जमीन में वो भागीदार हो गए ना? साझीदार हुए ना? तो जमींदार उनके ऊपर रोब-दोब से काम चलाते थे या उनको भाई बंधु समझते थे? रोब-दोब से काम चलाते थे। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा उतना रोब-दोब भले न रखा हो लेकिन अंदर से वृत्ति जैसी होनी चाहिए कि गुरू भगवान का रूप है, वो तो उनकी भावना पहले ही टूट चुकी थी, जब गुरूओं ने उनके जब प्रश्नों का जवाब नहीं दिया। गुरूओं से श्रद्धा ही उनकी उठ गई। और उन्होंने तो साक्षात्कार निराकार के किए थे कि साकार के किये थे? निराकार के किए। तो उनको श्रद्धा निराकार के ऊपर बैठेगी या साकार के ऊपर बैठेगी? निराकार के ऊपर श्रद्धा रहेगी।

For example, there used to be some *zamindars* (landlords). They used to have a lot of land. They used to give it to people on sharing basis. So, the people who used to labor on that land became their partners, didn't they? They became their partners, didn't they? So, did the *zamindars* dominate over them or did they used to consider them to be their brothers? They used to dominate them. Similarly, Brahma Baba may not have been so dominant, but the inner feeling which he should have had, that '[he is] guru, the form of God', [this feeling] had already broken when the gurus did not answer his questions. He lost all faith on the gurus. And did he have the divine visions of the incorporeal one or of the corporeal one? He had divine visions of the incorporeal one. So, will he develop faith on the incorporeal one or on the corporeal one? He will have faith on the incorporeal one.

जिज्ञासु: फिर कलकत्ता किस लिए गए?
बाबा: कलकत्ता सिर्फ इसलिए गए कि अपने जीवन में उन्होंने ये प्रैक्टिकल जीवन में देखा कि दुनियाँ में इतना सच्चा और साफ और ज्यादा होशियार व्यक्ति और कोई नहीं दिखाई पड़ा।
जिज्ञासु: आखिर लास्ट में तो समझ में आया ना?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Then why did he go to Calcutta?
Baba: He went to Calcutta only for the reason that in his life, in his practical life he could see no other person in the world who was so true, clear and intelligent.
Student: Ultimately he understood, didn't he?

बाबा: यही तो समझ में आया कि वो होशियार व्यक्ति है। ब्रह्माकुमारियों के ये समझ में आ रहा है कि वो एडवान्स पार्टी को चलाने वाला होशियार आदमी है या भगवान है? क्या समझ में आया? उनको इतना तक समझ में आ रहा है कि हाँ कोई बहुत होशियार आदमी है। ये थोड़े ही समझ में आ रहा है कि ये कोई भगवान का पार्ट चल रहा है। क्यों नहीं समझ में आ रही है? उनके बाप को ही ये बात समझ में नहीं आई, तो उनको कहाँ ये से समझ में आ जाएगी।

जिज्ञासु: बाबा, बाबा कहते हैं ना ड्रामा कल्याणकारी है?

बाबा: हाँ। अकल्याणकारी कौन बता रहा है?

जिज्ञासु: यज्ञ में ब्रह्मा बाबा को गीता का भगवान समझने से अकल्याण हो गया ना? तब से ही यज्ञ में नीचे गिरना शुरू हो गया।

बाबा: हाँ, हाँ। नीचे गिरना भी कल्याणकारी है। नीचे नहीं गिरेंगे तो अहंकार कैसे चूर-चूर होगा?
Baba: He only understood that he is an intelligent person. Do the Brahmakumaris understand that the person running the advance party is a clever person or God? What did they understand? They understand to the extent that he is a very intelligent person. They are unable to understand that God's part is being played. Why aren't they able to understand? Their father (i.e. Brahma Baba) himself did not understand this, so, how can they understand?
Student: Baba, Baba says that the drama is beneficial, doesn't he?
Baba: Yes. Who is saying that it is harmful?
Student: In the *yagya* harm was caused by considering Brahma Baba to be the God of the Gita, wasn't it? From that very time downfall began in the *yagya*.
Baba: Yes, yes. Downfall is also beneficial. If downfall doesn't take place, how will ego be smashed?

समयः 48.55-50.55

जिज्ञासुः बाबा, वेद, पुराण अपौरुषेय बोलते हैं।

बाबाः अपौरूषेय का मतलब क्या हुआ? एक होता है पौरुषेय, एक होता है अपौरुषेय। पौरूष माना पुरूष से बनाई हुई। अपौरुषेय माना जिनको पुरूष ने नहीं बनाया। तो जो वेद, पुराण, शास्त्र हैं वो असली वेद पुराण हद के वेद, पुराण, शास्त्र की बात है या बेहद के वेद, पुराण, शास्त्र की बात है? कहते हैं, ब्रह्मा के मुख से वेद निकले। ब्रह्मा के मुख में कौन प्रवेश होता है? शिव भगवान प्रवेश होते हैं। तो ब्रह्मा की आत्मा ने वेदों को मुख से निकाला या भगवान की आत्मा ने वेदों को ब्रह्मा के मुख से निकाला? तो उनको पौरुषेय कहेंगे या अपौरुषेय कहेंगे? जो मुरलियाँ हैं, जो ब्रह्मा के मुख से मुरलियाँ वाणी निकली हैं, वो पौरूषेय हैं या अपौरुषेय हैं? पुरूष के द्वारा दी हुई हैं या जो पुरूष है ही नहीं, शरीर रूपी पुरी में सोता ही नहीं है, आराम ही नहीं करता, रात-दिन सेवा में लगा रहता है, वो अपौरुषेय है। जो मुरली चलाई गई वो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

किसके द्वारा? ब्रह्मा की सोल ने चलाई, किसी पुरुष ने चलाई या भगवान ने चलाई? भगवान ने चलाई। ब्रह्मा में अगर चलाने की ताकत होती तो पहले ही 63 जन्मों में ऐसी मुरलियाँ चलाए देता जिनके एक-एक वाक्य में गुह्यार्थ भरा हुआ है।

Time: 48.55-50.55

Student: Baba, Vedas and Puranas are said to be *apaurushey* (not spoken by a human being).

Baba: What is meant by *apaurushey*? One is *paurushey* and one is *apaurushey*. *Paurush* means something created by man. *Apaurushey* means something which has not been created by man. So, the Vedas, Puranas and scriptures; is it about the limited Vedas, Purans and scriptures or is it about the unlimited Vedas, Purans and scriptures? It is said that Vedas emerged from the mouth of Brahma. Who enters the mouth of Brahma? God Shiv enters. So, did the soul of Brahma bring out the Vedas from his mouth or did God's soul bring out the Vedas from the mouth of Brahma? So, will they [Vedas] be called *paurushey* or *apaurushey*? The Murlis, the vanis which have emerged from the mouth of Brahma; are they *paurushey* or *apaurushey*? Have they been given by a man (*purush*) or has it been given by the one who is not *purush* at all, the one who does not sleep, does not rest in the body-like abode (*puri*) at all, the one who remains busy in service day and night, He is *apaurushey*. Through whom were the murlis narrated? Were they narrated by the soul of Brahma, were they narrated by a man or by God? They were narrated by God. If Brahma had the power to narrate (Murlis), he would have narrated such Murlis in the 63 births in which there is a deep meaning in every sentence.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info